1

सिन्धु घाटी सभ्यता की कला
Art of Indus Valley Civilization

1.0 भूमिका

भारत के उत्तर पश्चिमी भूभागों में प्राचीन सभ्यता की खोज और खुदाई की योजना में सबसे पहले सिंध प्रान्त के वीरान नगर हड़प्पा में खुदाई हुई। (अब यह स्थान पाकिस्तान में है)। इसी आधार पर इस प्राचीन भारतीय सभ्यता का नाम हड़प्पा सभ्यता पड़ गया, किन्तु बाद में इसे सिन्धु घाटी की सभ्यता, मोहनजोदड़ो की सभ्यता अथवा सिन्धु, सरस्वती सभ्यता आदि नाम भी दिए गए।

खुदाई में प्राप्त नगरों की रचना, मूर्तियों, खिलौनों, मोहरों, औजारों, बर्तनभांडों, सिक्कों, आभूषणों, लिखावट तथा पक्की ईंटों आदि की जांच पड़ताल के आधार पर इस प्राचीन सभ्यता का विकास काल 2500 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व के बीच माना गया है। भारत के प्राचीन उजड़े हुए नगरों के टीलों से खुदाई में खोजियों ने अब तक लाखों महत्वपूर्ण कला सम्बन्धी नमूने खोज निकाले हैं। उन में से केवल चार कलाकृतियों का अध्ययन ही आप लोग प्रस्तुत पाठ में करेंगे।

1.1 उद्देश्य

इस प्रस्तुत पाठ का अध्ययन करने के बाद आपः–

- हड़प्पा कालीन सभ्यता की कला के काल (समय) का विवरण दे सकेंगे;
- पाठ में वर्णित कला कृतियों के नाम बता सकेंगे;
- पाठ में वर्णित कला कृतियों के खोज–स्थान, माप, कलाकार, शैली, रंग, तथा उनके संग्रहण स्थानों का विवरण प्रस्तुत कर सकेंगे;
- पाठ में वर्णित कला कृतियों की अलग–अलग विशेषताएं बता सकेंगे;
- पाठ में वर्णित कला कृतियों के नाम से पहचान कर सकेंगे

मातृ देवी

1.2 मातृ देवी

कलाकृति	–	*मातृ देवी की मूर्ति*
माध्यम	–	*मिट्टी से बनाकर आग में पकाई गई*
रचनाकाल	–	*हड़प्पा काल, लगभग 2500 ईसा पूर्व*
खुदाई का स्थान	–	*मोहनजो–दाड़ो*
आकार	–	*8.5x3.4 सें.मी.*
कलाकार	–	*अज्ञात*
संग्रह	–	*राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली*

सामान्य परिचय

कलाकार ने अच्छी चिकनी मिट्टी को आटे की तरह गूंथ कर, अपनी उंगलियों की सहायता से इस मूर्ति को बनाया। फिर लकड़ी के छोटे–छोटे औजारों की सहायता से मूर्ति पर बारीक काम किए। छाया में मूर्ति को खूब सुखाने के बाद इसे आग में पकाया गया। मातृ देवी की यह मूर्ति भारत की ही नहीं, संसार की प्राचीन मिट्टी की मूर्तियों में अपना प्रथम स्थान रखती है। इस मूर्ति का रंग पकी ईंट जैसा लाल है। सजावट के लिए मूर्ति के सिर पर दो अर्द्धगोलाकार दीपों को सजाया गया है। लगता है जैसे इन में तेल भरकर जोत जलाई जाती हो। दोनों दीपक जैसे आकारों पर दोहरी उभरी हुई पट्टियाँ बनाई गई हैं। एक पर सजावट के लिए उभरा हुआ फूल बनाया गया है। पीछे बालों को ऊपर कर जूड़ा बनाया गया है। मूर्ति के वस्त्रों के बनाने में घुटनों से ऊँचा कोपीन (स्कर्ट जैसा वस्त्र) बनाया गया है। इससे ऊपर गहने की तीन लड़ी वाली तगड़ी बनाई गई है। तगड़ी में सामने बड़ा फूल बनाया गया है। तगड़ी के चलन का यह प्राचीनतम उदाहरण है।

मूर्ति के गले में दो लड़ी वाली कंठी है जिसमें चार लटकते हुए मनके हैं। गले में लटकता हुआ हार है जिसमें एक बड़ा पेन्डिल है। मूर्ति की आँख, नाक़ तथा होठों को मिट्टी के उभार से बनाया गया है।

पाठगत प्रश्नः (1.2)

निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करो।

क. मातृ देवी की मूर्ति ———से बनी है।

ख. मातृ देवी की मूर्ति ————से प्राप्त हुई है।

ग. यह मूर्ति ————पहने हुए है।

बैल वाली मुहर

1.3 बैल वाली मुहर

कलाकृति	–	*बैल वाली मुहर*
माध्यम	–	*सिल–खड़ी (Steatite)*
रचनाकाल	–	*हड़प्पा काल*
खुदाई का स्थान	–	*मोहनजो–दाड़ो*
आकार	–	*2.5x2.5x1.4 सें.मी.*
कलाकार	–	*अज्ञात*
संग्रह	–	*राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली*

सामान्य परिचय

सिलखड़ी (स्टिटाईट) नामक कोमल पत्थर तराश करके यह मोहरें बनाई जाती थीं। इसमें इन्टैग्लियो (उत्कीर्ण आकृति) विधि का प्रयोग हुआ है।

मुहर में एक उभार कर बनाया हुआ बैल आप देख रहे हैं। उसकी कूबड़ उसके शक्तिमान होने की निशानी है। बैल के दो बड़े–बड़े सींग हैं। काठियावाड़ी लम्बे सीगों वाले बैलों की नस्ल आज भी गुजरात प्रदेश में मौजूद है। बैल के अगले दोनों पैरों के बीच से मुँह तक लटकती हुई चादर तथा उसके शरीर के अन्य सब अंगों की बनावट से बैल का यौवन तथा शक्ति झलक रही है।

बैल को पार्श्वचित्र (PROFILE) में बनाया गया है। मुहर में बैल के ऊपर खाली जगह में कुछ लिखा भी गया है। हड़प्पा काल की इस लिखावट को अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है। हड़प्पा काल के व्यापारी अपने सामान पर लगाने के लिए ऐसी मुहरों (सील) का उपयोग करते थे।

पाठगत प्रश्नः (1.3)

सही उत्तर छाँट कर लिखो

(क) बैल वाली मुहर जिस माध्यम से बनी है, उसका नाम है

(i) मिट्टी

(ii) पत्थर

(iii) सिलखड़ी (स्टिटाईट)

(ख) मुहर का प्राप्ति स्थान है

(i) हड़प्पा

(ii) मोहनजो–दाड़ो

(iii) चाहनू–दाड़ो

चित्रित रंगीन बर्तन

1.4 चित्रित रंगीन बर्तन

कलाकृति का नाम	–	*स्टोरेज जार*
माध्यम	–	*कच्ची मिट्टी से बना कर आग में पका कर (terracota)*
रचनाकाल	–	*हड़प्पा काल*
खुदाई स्थान	–	*हड़प्पन*
आकार	–	*ऊँचाई, 21¾"*
कलाकार	–	*अज्ञात*
संग्रह	–	*राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली*

सामान्य परिचय

कच्ची मिटटी को आटे की तरह गूंध कर कुम्हार (शिल्पी) ने चाक के सहारे से अपनी उगंलियों द्वारा इस बड़े बर्तन की रचना की। इसका पेट बड़ा और गर्दन छोटी है। कच्ची मिट्टी के बने जार को सुखाने के बाद उस पर रंगीन चित्रों की रचना तथा चमकदार पालिश की गई। इन कलात्मक कामों के बाद इस जार को आग में पकाया गया (अपनी पुस्तक में बने चित्रित रंगे हुए बड़े बर्तन के चित्र का अवलोकन कीजिए)। जार पर बने डिजाइनों को देखने से आपको पता चलता है कि जार पर ज्यामितीय, वनस्पति आदि के चित्र बने हैं। चित्रों के लिए जार को उस के मुंह तथा पैन्दी तले के सामानान्तर पैनलों में विभाजित किया गया है। यह जार संग्रह करने तथा चीजों को रखने के काम में आता था।

पाठगत प्रश्नः (1.4)

शुद्ध उत्तर छाँट कर लिखो।

(क) यह जार बनाने के लिये
- (i) औजारों का सहारा लिया गया।
- (ii) कुम्हार के चाक का सहारा लिया गया।
- (iii) छेनी का सहारा लिया गया

(ख) इस बर्तन का समय काल
- (i) 1st C.A.D
- (ii) 6वी C.A.D
- (iii) लगभग 2500 ईसा पूर्व

(ग) जार की ऊँचाई
- (i) 24½"
- (ii) 21¾"
- (iii) 30¾"

आभूषण

1.5 आभूषण

गले का हार (नेकलस)

कलाकृति	–	*गले का हार (नेकलस)*
माध्यम	–	*मूल्यवान हरे रंग का पत्थर*
समय	–	*हड़प्पा काल*
खुदाई का स्थान	–	*मोहनजो–दाड़ो*
हार की बनावट	–	*30 बीज, 6 बड़े बेलनाकार बीज, 3 लौकेट जाक मजबूत डोरी में डाले गए हैं।*
कलाकार	–	*अज्ञात*
संग्रह	–	*राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली*

सामान्य परिचय

सिन्धु घाटी सभ्यता की खुदाई में प्राप्त आभूषण इस बात के प्रतीक हैं कि उस काल के भारतीय लोगों का जीवन बड़ा कलात्मक रहा होगा। मोतियों के कन्ठे, माला, हार, चूड़ियां तथा कानों के आभूषणों आदि से हड़प्पा काल की उत्तम शिल्पकारी का आभास होता है।

धातुओं को मिलाकर पिघलाने तथा साचों में ढालने की कला में उस काल की भारतीय संस्कृति के कलाकार निपुण थे। हड़प्पा काल में अनेक प्रकार के मनकों से बने हुए आभूषण प्राप्त हुए हैं। गले में झूलती हुई माला का एक अलग ही सौंदर्य है। उस काल के शिल्पकारों को इस का ज्ञान था। पाठ में संकलित यह गले का हार (नेकलस) अपनी शिल्पकला का बेहतरीन नमूना है।

पाठगत प्रश्नः (1.5)

सही उत्तर छाँट कर लिखोः

(क) हार जिस माध्यम में बना है, उसका नाम है

(i) हीरा

(ii) रूबी

(iii) जेड

(ख) इस हार में लॉकेट की संख्या है

(i) दो

(ii) पाँच

(iii) तीन

(ग) संग्रहालय का नाम जहाँ हार रखा है

(i) भारतीय संग्रहालय, कोलकाता

(ii) राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

(iii) लाहौर संग्रहालय, पाकिस्तान।

1.6 सारांश

हड़प्पा काल के कलाकार कांसे की धातु बनाने, उस को ढालने, पत्थर की मूर्ति तराशने, मिटटी की मूर्ति, बर्तन तथा मुहरें आदि बनाने तथा उनको आग में पकाने आदि में निपुण थे। प्राकृतिक मोटिफ, मानव आकृति, मातृशक्ति, शैवशक्ति, पशु तथा पक्षी आदि की रचना करना उनके प्रिय विषय थे।

"भारतीय संस्कृति को मातृशक्ति, शैवशक्ति, नन्दी तथा पवित्र पीपल वृक्ष हड़प्पा संस्कृति की ही देन है", ऐसा अनेक विद्वानों का मत है।

1.7 पाठगत प्रश्न के उत्तर

1.2 (क) टेराकोटा (ख) मोहनजो–दाड़ो (ग) ऊँचा कोपीन

1.3 (क) सिलखड़ी (स्टिटाईट) (ख) मोहनजो–दाड़ो

1.4 (क) कुम्हार के चाक का (ख) लगभग 2500 ईसा पूर्व (ग) 25¾"

1.5 (क) जैड (ख) तीन (ग) राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

1.8 माडल प्रश्नः

(1) सिन्धु घाटी सभ्यता की किसी एक कलाकृति पर टिप्पणी लिखिए।

(2) टेराकोटा के विषय में आप क्या जानते हैं।

(3) सिन्धुघाटी की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

1.9 शब्दकोश

स्टिटाईट – सोपस्टोन, कोमल पत्थर

जैड – हरे रंग का मूल्यवान पत्थर

टेराकोटा – मिट्टी को आग में पका कर बनाया जाता है

इन्टैग्लियो – उत्कीर्ण आकृति।